सबके साथ सबका विकास

हम आज विकास के युग में जी रहा है। 2025 के अंदर भारत पूरी तरह विकसित हो जाएगें - यही हम सबका सोच है। यह बहुत जल्द सफल हो जाएगें। विकास का जितना अच्छाई है ~~उससे भी कई गुणा~~ उतना ही ~~ज़्यादा~~ बुराई भी है।

आज-कल के नौजवान और बाकी सब एक ऐसी भारत का सपना देख रहा है जो पूरी तरह से डेवलपट है। लेकिन कुछ लोग ऐसे है जो इसके खिलाफ है। उन लोगों के अंदर एक डर है जो उन्हें इसके खिलाफ ले जा रहा है। उन्हें इस बात का डर है कि वे इस खूबसूरत धरती को खो न दूँ।

हमारी प्रकृति बहुत ज़्यादा सुंदर है। उसकी वजह है यहाँ पेड़-पौधे, जीव-जन्तू... मैं एक बात यकीन के साथ कह सकता है कि जब विकास आएगें तो यह सब हमसे बहुत दूर चली जाएगें। क्योंकि विकास पाना उतना आसान बात नहीं है जैसा हम सोच रहा है। विकास पाने के लिए हमें कई चीजें नष्ट होगा। उनमें से एक

मुख्य चीज़ है हमारी प्रकृती।

आज अगर हम एक बार अगर हमारे आस-पास के ओर मूड़कर देखेंगे तो हमें हर जगह बड़े-बड़े इमारतें ही नज़र आएगें। पेड़-पौधे, फूल-फल .. सब कम ही नज़र आएगें। यह विकास का फल है।

विकास के नाम कहकर आज-कल के नौजवान खेतों में मिट्टी भरता है, पेड़ो को काटता है, अलग-अलग तरह की प्रदूषण करता है. उसकी हरकतें इसी से रूक नहीं जाती। मानव को जीने के लिए तीन चीजें बहुत ज़रूरी है। वो है; हवा, पानी और खाना। इन तीनों के बिना हम जी नहीं सकते। हमारी शहरों में आज कई फॉकटरियाँ आई है। यहाँ की सारी कचरा-कचरा लोग आस-पास के नदि या तालाब में फैंकता है। और इसी की वजह से वह पीने की लायक नहीं रहता। वहाँ से जो लोग नहाते है वह सब बीमार पड़ते है और अस्पताल में अडमिट हो जाता। ऐसे हम पानी को खोता है।

अगर हम हवा के बारे में देखेंगे तो, फॉकटरियों से जो दुआ निकलता है वह हवा को प्रदूषण करता है। उसके साथ-साथ हमारी घर से जो दुआ निकलता है, वो भी सीधा हवा से मिलकर, सासनलेने की लायक नहीं बनाती है।

खाना तो हमें पेड़ों से, खेतों से सब मिलता है। लेकिन लोग पेड़ों को काटकर, खेती बाड़ी करकर उसका भी नाश करता है। हमें इसलिए बाकी देश की लोगों को आश्रय करना पड़ता है। अगर ना रहा जल, ना रही हवा और ना रही खाना तो हम यहाँ कैसे जी पाएगें? यह सब होने की एक मुख्य कारण विकास है। विकास के लिए हमें यह सब करना पड़ता है।

मशहूर कवि सुमित्रानंद पंत जी की कुछ पंक्तियाँ है जो हमें प्रकृति की महत्व के बारे में बताते है। वह कुछ ऐसा है।

"माँ-धरती तेरे गाते गान
बच्चें हम छोटे अनजान
नदियाँ पर्वत रेगिस्थान

जंगल उपवन और मैदान
रंग-बिरंगे गुलिस्थान
हमको तुम पर है अभिमान"

इस कविता में कवि प्रकृति की महत्व के बारे में बताते है। जब हम विकास की नाम कहकर प्रकृति को बरबाद करते है तब हमें इन पंक्तियों को एक बार हमारे दिमाग में लाना पड़ेगा।

इससे सिर्फ प्रकृति को नहीं बल्की लोगों को भी तकलीफें सेहना पड़ता है। कुछ इसकी वजह से अपने घर खो जाती है। विकास के लिए नए-नए इमारतें, सड़के, ऐयरपोर्ट बठाने के लिए इन बेचारों का घर वहाँ से हटाना है और वह सड़क पर आ जाती है।

विकास की सिर्फ बुराईयाँ ही नहीं बल्की अच्छाईयाँ भी है। विकास पाने से हमारे जीने का स्टाटस और भी बढ़ जाती है। हमें उससे नए-नए चीज़े सीखने को मिलेगें। सब कुछ डिजितल हो जाएगा।

CODE NO: 7

आज-कल के जमाने में जो लिखना नहीं जानता उसे हम निरक्षर बुलाता है। लेकिन आने वाले कल में जो जिसको कम्प्यूटर परिज्ञान नहीं है उसे हम निरक्ष बुलाएगें। वह इसलिए है क्योंकि एक विकसित देश में सबको कम्प्यूटर परिज्ञान होना चाहिए। वरना वो वहाँ कुछ भी नहीं कर पाएगे।

'अमेरिका' तो पूरी तरह से विकास पाया है। अगर हम भारत के बारे में देखेगें तो, भारत विकास पा रहा है लेकिन पूरी तरीके से नहीं पाया है।

विकास की एक उत्तम उदाहरण है 'कोचिन मेट्रो'। वह बनाने में कई तकलीफें सहा है। लेकिन जब वो बना तब वह पूरी तरीके से बेहद अच्छा बना है। इसी तरह भारत की कई देशों में इस तरह की काम चल रहा है। उम्मीद करता हूँ की वे अच्छा बन जाए।

विकास पाने से हम सबका जीने का स्टान्टेर्ड और भी अच्छा बन जाएगें। वह इसलिए है क्योंकि जब विकास होगा

तब हमें नए चीज़ सीखने को मिलेंगे, और इसलिए हम यहाँ सबकी तरह धूम-धाम से रहने के लिए उन चीज़ों को सीखता हूँ। इसी के साथ हमारे स्टान्टेर्ड भी बढ़ जाएंगें।

विकास के साथ-साथ विज्ञान भी बढ़ जाएगें। विज्ञान के बिना विकास के बारे हम सोच नहीं सकते। विज्ञान के बिना कोई भी विकास नहीं पा सकता है। आज-कल विज्ञान के मदद से नई चीज़ें लोग बनाता है। हमारे काम और भी आसान बनाने के लिए रोबोट्स को बनाया है। घर की साफ-सफाई के लिए, पेड़ काटने के लिए, फल-सबजीयाँ काटने के लिए... सारी चीज़ो के लिए आज हमारे पास मशीनें है। यह भी विकास की बाकी है।

विकास आने से, नई-नई इमारतें, फॉक्टरियाँ और आफीसें आ जाऊँगी। और इसी से वहाँ की लोगों को उन फॉक्टरियों में या फिर उन ऑफीसों में काम मिल जाएगा।

विकास के साथ-साथ अस्पताल में नए चीज़ें आ जाएगें। इससे आपरेशन स्कानिंग सब आसान हो जाएगा। यह हमारे लिए बहुत फायदे का चीज़ है।

~~आज~~ विकास के वजह से ~~ग्लो~~ ग्लोबल वॉमिंग ~~और~~ बढ़ जाएगा। यह हमें यहाँ पर जीना न मुमकिल बना लेगीं। पेड़ काटने से कॉर्बण डैओकसैट कम हो जाएगा। यह चीज़ों से हम जीते जी मर जाएगे।

जैसे कि मैने पहले बोला, विकास के जितना अच्छाईयाँ है उतना ही बुराईयाँ है। कई देशों विकास पाया है और कुछ देशों अभी विकास पा रहा है। जब हम विकास के बारे में सोचेगें तब हमें प्रकृति, मानव, धरती यह सबकी बारे में भी सोचना चाहिए। हमें विकास चाहिए लेकिन उसकी वजह से किसी को भी कोई नष्ट नहीं होना चाहिए।

जब हमारी यहाँ विकास चल रहा है तब हमें यहाँ की लोगों के बारे में सोचना चाहिए। अगर हम एक

पेड़ काटेगें तो हमें दो पौधें लगाना चाहिए। जब हम लोगों को घर विकास के लिए हटाएगें तब हमें उन्हें नए घर बनवा कर देना चाहिए। जब हम प्रदूषण करेगें तब हमें उसके लिए उपाय भी ढूढना चाहिए। हम विकास पाने के लिए जितना भी खलतीयाँ करेगें, उसको ठीक कराने के लिए यानी कि अपनी खलती सुदारने के लिए कुछ करना होगा।

"सबके साथ सबका विकास" इसे अँग्रेज़ी में "सस्तेनबल डेवलपमेन्ट" कहता है। जब विकास चल रहा है तब हमें सबके साथ साथ के ज़रूरत है। अगर यहाँ देशवासियों इसकी खिलाफ है तो हमें कुछ भी करना नहीं चाहिए। या फिर हमें उन्हें इसके बारे में समझाना पड़ेगा और हमें उनकी शर्तों को मानकर यानी कि प्रकृति या मानव को कोई छोट न पहूँचाकर काम करना होगा।

हम तो अब नए पीढ़ी में जी रहा है। हम विकास पा रहा है।

लेकिन आनेवाले कल की बात नहीं है। वो जब आएगें तब हम विकास पा चुका होगा। उन्हें यहाँ रहने के लिए सिर्फ एक डेवलप देश की ज़रूरत नहीं बल्की एक हरा-भरा, हरियाली से भरा हुआ, एक सुंदर प्रकृति का भी ज़रूरत होगा। इसका मतलब यह है की हमें यहाँ की चीज़ों का इस्तमाल करना चाहिए और उन्के लिए संभालकर रकना भी चाहिए। तब ही वो एक अच्छा ज़िन्दगी जी पाएगी। सिर्फ विकास के साथ हम जी नहीं सकता है। विकास के साथ-साथ हमें हवा, जल, खाना... सबकी ज़रूरत है। हमें ~~आन~~ हमारा ~~कर्तव्य~~ कर्तव्य ठीक से करना होगा। बाकी उनकी ज़िम्मेदारी है कि वह उन चीज़ों को उन्की बाद जो आनेवाला है उनके लिए संभाले।

विकास पाने से हमारे पाठशाला और भी बेहतरीन बन जाएगी। उसकी साथ पढना और भी आसान होगा।

विकास एक सिक्का की तरह है उसका अच्छाई भी है और बुराई भी है। आज लोग विकास पाने के लिए खलतीयाँ करने के लिए तैयार है लेकिन उन्हें सुधारने के लिए कोई भी तैयार नहीं है। हमें ऐसा नहीं होना चाहिए। हमारा लक्ष्य यह है कि "सबके साथ सबका विकास"। हमें इसी लक्ष्य की साथ आगे बढ़ना चाहिए। सबके साथ के साथ हमें विकास पाना चाहिए।